Sanskrit honours.
Part-III
Paper-VI
Kanak Lata Kumari

## भाषा और बोली में अंतर -

भाषा निर्धारण में शिक्षा व्यवसाय, भौगोलिक स्थिति आयु सामाजिक स्थिति और वातावरण आदि का भेद सहायक होता है। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि एक व्यक्ति की भाषा दूसरे व्यक्ति की भाषा से भिन्न होती है। इस रूप में प्रत्येक व्यक्ति की भाषा बोली होती है और एक व्यक्ति की बोली सदा एक सी नहीं होती है अर्थात् वातावरण और प्रयोग किए जाने वाले स्थान परिवर्तन के साथ ही व्यक्ति के बोली में भी परिवर्तन आ जाता है। इस प्रकार-"भाषा वह साधन है जिससे हमारे विचार व्यक्त होते हैं और हम इसके लिए ध्वनियों का उपयोग करते हैं। इस तरह से भाषा शब्दों और वाक्यों का ऐसा समूह है, जिससे मन की बात बताई जाती है। भाषा एक राष्ट्रीय समाज की प्रतिनिधि होती है। भाषा का उपयोग समाज में साहित्यिक, व्यापारिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, और प्रशासनिक आदि सभी औपचारिक कार्यों में किया जाता है। हिंदी खड़ी बोली का रूप है। 700 वर्ष तक हिंदी बोली के रूप में प्रचलित रही थी। भाषा का व्याकरण मानिक रूप से मान्यता से प्राप्त है।

बोली- बोली भाषा का सबसे छोटा स्वरूप होता है और सीमित होता है। यह आमतौर पर व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है और इसका प्रयोग भी आधारित होता है। बोलियों के समूह ही उपबोली बनती है। उपबोली के समूह से ही बोली बनाई जाती है। भाषा का विकास बोलियों द्वारा ही होता है। बोलियों के व्याकरण का मानकीकरण होता है और बोली लिखने या बोलने वाले से ठीक से अनुसरण करते हैं और व्यवहार करते हैं। बोली भी सक्षम हो जाती है कि, लिखित साहित्य का रूप धारण कर सके और उसे भाषा का स्तर प्राप्त हो जाता है।

भाषा और बोली में सामान्य अंतर इस प्रकार है-भाषा में व्याकरण होता है किंतु बोली में नहीं। भाषा की लिपि होती है किंतु बोली कि नहीं। भाषा विस्तृत होती है किंतु बोली क्षेत्रीय होती है। भाषा नियमों में बंधी होती है किंतु बोली नहीं।

प्रत्येक देश में भाषा के तीन मुख्य रूप देखने को मिलते हैं- बोलियाँ, परिनिष्ठित भाषा तथा राष्ट्रभाषा। बोली- भाषा के जिन रूप का प्रयोग साधारण जनता अपने समूह या घरों में करती है उसे बोली कहते हैं। भारत का उदाहरण लें तो यहाँ तकरीबन 650 बोलियाँ बोली जाती हैं जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित हैं। बोलियों में-पूर्वी हिन्दी– अवधी, बुघेली और छत्तीसगढ़ी।

बिहारी बोली- भोजपुरी, मगही, मैथिली तथा अगिया।

पश्चिमी क्षेत्रों में- ब्रज, बांगर, खड़ी बोली, कन्नौजी आदि बोलियाँ बोली जाती हैं।

राजस्थानी बोलियों में- मारवाड़ी, मेवाती आदि प्रचलित हैं।

परिनिष्ठित भाषा-किसी भाषा को जब व्याकरण से परिष्कृत किया जाता है तो वह एक परिनिष्ठित भाषा कहलाती है। जैसे आज हमारी खड़ी हिन्दी भाषा सौ साल पहले एक बोली ही थी किन्तु आज परिनिष्ठित भाषा है।

राष्ट्रभाषाः किसी भी देश में जब परिनिष्ठित भाषा देश की बहुसंख्यक जनता द्वारा व्यापक रूप में प्रयोग में लायी जाती है तो वह राष्ट्रभाषा बन जाती है जिसमें राजनीतिक एवं सामाजिक शक्तियाँ एक परिनिष्ठित भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने में सहायक होती है।)